

पाठ –27 पांडवो और कौरवों.....

पांडवों की सेना के नायक धृष्टद्युम्न थे और कौरवों के नायक भीष्म पितामह बनें ।

युद्ध प्रारंभ होने से पहले बलराम कौरव और पांडवों से मिलने आए थे और उन्होंने दोनों को ही अपना शिष्य कहकर युद्ध क्षेत्र में प्रविष्ट होने से मना कर दिया ।

संपूर्ण भारत वर्ष में इस युद्ध के समय दो ही राजा तटस्थ रहे पहले बलराम और दूसरे रुक्मी ।

युद्ध क्षेत्र में दोनों सेनाओं के आमने—सामने होने पर अर्जुन को अपने ही भाई—बंधुओं से युद्ध करना अच्छा नहीं लगा ।

श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को कर्म का महत्त्व समझाने के लिए कुरुक्षेत्र में कर्मयोग का उपदेश देना पड़ा जो आगे चलकर श्रीमद्भगवद् गीता के नाम से जन—जन के बीच पहुँचा ।

युधिष्ठिर द्वारा भीष्म पितामह से आशीर्वाद लेकर युद्ध का शंखनाद किया गया ।

भीष्म के नेतृत्व में यह युद्ध दस दिन तत्पश्चात आचार्य द्रोण, कर्ण और अंत में महाराज शल्य के नेतृत्व में; इस प्रकार कुल अट्ठारह दिन तक महाभारत युद्ध चला ।